फरीदाबाद

मजदूर समाचार

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा

नई सीरीज नम्बर 82 अप्रैल 1995

इस अंक में

- कैलकॉम इलैक्ट्रोनिक्स
- आपबीती : लखानी शूज वरकर की
- संवाद के उद्देश्य और लक्ष्य
- मौर्या उद्योग

नारद मुनि ने हमसे चुगली नहीं की

गुडईयर के एक मजदूर की मैनेजमेंटों - यूनियनों के गठजोड़ों के खिलाफ आक्रोश भरी बातें ; दस साल लगन से काम करने के बाद भी मैनेजमेंट द्वारा तरक्की नहीं देने पर दुखी हितकारी पोट्रीज के एक कुशल मजदूर को हुये असहायता के बोध ; और बाटा के सस्पैन्ड वरकरों से इनक्वायरी अफसर की हेरा-फेरी के किस्से सुन कर हम थोड़ा सुस्ता रहे थे कि वीणा की झँकार के संग नारायण...नारायण के स्वरों पर हम चौंक पड़े। नारद मुनि ने मजदूर लाइब्रेरी में प्रवेश किया ! आदरपूर्वक हमने उन्हें बिराजने को कहा। कुर्सी पर बैठ नारद जी प्रसन्नता से मन्द-मन्द मुस्काने लगे।

"सुनाइये महाराज" – हम इतना कह ही पाये थे कि नारद जी शुरु हो गये। "बच्चो मैं महीने-भर से सुन ही सुन रहा हूँ। विद्वानों की बातों से मुझे अपच हो गई है। बोलने के लिये छटपटा रहा था इसलिये तुम लोगों के पास चला आया।" और इतना कह कर नारद मुनि तीन घन्टे धाराप्रवाह बोलते रहे:

स्वर्ग लोक में बगावत हो गई है। सेवकों ने सेवा करनी बन्द कर दी है। अप्सराओं ने नाचना बन्द कर दिया है। बेमतलब के कामों को चुनौती देते दास-दासी फुरसत को महिमामंडित कर रहे हैं। देवी-देवताओं में खलबली मच गई है। चिर यौवन और सेवा करवाने के सनातन अधिकार का क्या होगा? स्वयं इन्द्र का सिंहासन डोलने लगा है। देवराज इन्द्र ने नारद जी से अनुरोध किया कि वे पता करें और बतायें कि दास-दासियों को कन्ट्रोल में कैसे रखें। इसलिये रमते जोगी नारद मुनि पृथ्वी लोक में पधारे हैं। महीने-भर से नारद जी फरीदाबाद में मैनेजमेंटों से उन नुस्खों-नुक्तों-नुआन्सेज की जानकारी ले रहे हैं जिनके जरिये वे मजदूरों को मुट्ठी में रखती हैं। नारद जी ने अदने से अदने मैनेजमेंट काडर के व्यक्ति को कुटिलता और क्रूरता की व्याख्या इतनी सहजता से करते पाया कि उनका माथा भन्ना गया।

चोर की बजाय चोर की माँ को देखने की तर्ज पर नारद जी मैनेजमेंट ट्रेनिंग इन्सटीट्यूटों में गये। विद्वान पंडितों - आचार्यों - प्रोफेसरों की गूढ - गम्भीर पुस्तकों - मैनुअलों - प्रवचनों - रिसर्च पेपरों को देख - सुन कर नारद जी को कुटिल शिरोमणी चाणक्य व मैकियावेली दूध मुँहे बच्चे नजर आये। मुनिश्री ने व्यक्ति के सीमित और संस्थागत तरीके के असीमित शक्ति - ज्ञान - दौलत - वैभव की जो बातें देखी - सुनी वह उनके मन - मस्तिष्क पर इस कदर हावी हो गई हैं कि चुगली व हास्य की अपनी चारित्रिकता त्याग शिशु सुलभ विस्मय से वे हमसे कहते गये :

अमीरी लाख - दस लाख से शुरु हुई और अमीर से अमीर व्यक्ति करोड़ - अरब - खरब की सीमाओं में बन्धा है जबकि लिमिटेड कम्पनियों - कारपोरेशनों का जन्म ही करोड़ - अरब से हुआ था। नील - शँख - पद्म को पार कर चुकी कम्पनियों - कारपोरेशनों की औकात दर्शाने के लिये इतनी बिन्दियाँ लगानी पड़ती हैं कि जीरों की महान खोज करने वाले महर्षियों के देश तक में संख्याओं के नाम नहीं खोजे जा पा रहे, उन नामों को याद रखने से दिमाग ने तो बहुत पहले जवाब दे दिया था।

छोटी-सी प्रोयगशाला में दिन-रात एक करने वाले अति तीव्र-तीक्ष्ण बुद्धि वाले वैज्ञानिकों का दौर जा चुका है। शोध - खोज - अन्वेषण ने संस्थाओं का रूप ग्रहण कर लिया है। हजारों रिसर्च वरकर शिफ्टों में प्रोजेक्टों के छोटे-छोटे टुकड़ों पर काम करते हैं। विभिन्न यन्त्रों-मशीनों पर हजारों रिसर्च वरकरों द्वारा एक्सपेरिमेन्ट कर एकत्र किये आँकड़े कम्प्यूटरों पर संचित व विश्लेषित होते हैं। यह जो खोज है, यह जो कारपोरेट रिसर्च है, संस्थागत अनुसन्धान है इसके सम्मुख आर्यभट्ट - गैलिलियो - न्यूटन की विद्वता-महानता के किस्से बखान करना गर्मियों में दोपहर को रोशनी के लिये दीप जलाना है।

ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेन्ट - मानव संसाधन विकास के विभाग और मन्त्रालय लोगों को मनमाफिक साँचों में ढालने के लिये सामाजिक विज्ञान में नित नये रिसर्च प्रोजेक्ट आरम्भ करते हैं। विश्वविद्यालय रूपी ज्ञान उत्पादन की फैक्ट्रियों से रिसर्च पेपरों - शोध पत्रों की झड़ी लगी है। लाइब्रेरियों में प्रकाशनों को तरतीब से रखने में पुस्तकालय-विज्ञान फेल हो रहा है और लाइब्रेरियाँ कम्प्यूटरों में सिमटने की ओर बढ रही हैं। ऐसे में कृष्ण - मनु - बुद्ध - अफलातून - शंकर - रामानुज - रूसो - हेगेल की दर्शनाशास्त्रिय पराकाष्ठा की चर्चा करना सोते में बोलना है।

व्यक्ति, महानतम व्यक्ति भी, अत्यन्त गौण - औकातहीन - वजनहीन हो गया है। संस्थागत - इन्सटीट्यूशनल रूप का ही वजूद है ! कहते-कहते नारद जी के मुँह में झाग आ गये। हमने उन्हें थोड़ा सुस्ताने और पानी पीने को कहा तो मुनिश्री बोले कि पानी-वानी छोड़ो और गरम-गरम चाय दो ताकि उत्तेजना बनी रहे और जो कुछ उनके मन - मस्तिष्क को झंझोड़ रहा है उसे उगल कर वे थोड़ा शान्त हो सकें।

चाय पीते वक्त नारद जी थोड़ा संयत हुये और चुगली की चमक उनकी आँखों में पुनः कौंधी। "संस्थागत ! हुँह, व्यक्ति कुछ नहीं और संस्था - कम्पनी सब कुछ !!" कह कर नारद जी ने ठन्डी साँस ली और बोले कि देवराज इन्द्र को तो वे अपनी रिपोर्ट देंगे ही, हम भी सुन लें ताकि अखबार में लिख सकें। मजदूरों को नारद जी की बातों पर गौर करने का मौका मिलेगा तो इससे शायद व्यक्ति के संस्थाओं के पुर्जे बन जाने के हालात को बदलने में कुछ मदद मिले।

फरीदाबाद इन्डस्ट्रीज एसोसियेशन के प्रेसीडेन्ट, स्माल इन्डस्ट्रीज संघ के प्रधान, मैनेजमेंट ट्रेनिंग इन्सटीट्यूट के प्रिन्सीपल, जाने-माने विधि-ज्ञान-विज्ञान विद्वानों में से हरेक ने बच्चों को समझाने के अन्दाज में नारद जी को मैनेजमेंटों का नीति - वाक्य समझाने से अपनी बात आरम्भ की। नीति - वाक्य है : कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन। और हरेक ने अपने-अपने मुहावरों-किस्सों के जरिये नारद जी को स्पष्ट किया कि कच्चे माल के भाव, बिजली-तेल के रेट, व्यापारियों का मार्जिन, एक्साइज व अन्य टैक्स लागत का प्रमुख हिस्सा हैं और इन पर किसी भी फैक्ट्री की मैनेजमेंट का दखल ना के बराबर है। इसलिये कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन का एक ही अर्थ है : मजदूरों के वेतन आदि पर कम से कम खर्च करना और वर्क लोड अधिक से अधिक बढाना। इसलिये नित नई-नई मशीनें, इसलिये सुपरविजन में फोरमैनों-मैनेजरों के संग-संग कैमरों-कम्प्यूटरों का जाल...

एक सहज-सरल वाक्य की जटिल से जटिल होती जा रही व्याख्या से सुनने-गुनने की नारद मुनि की अथाह कैपेसिटी फेल हो गई। मैनेजमेंटों के मूल तत्व पर दीर्घ प्रवचनों के दौरान नारद जी को पृथ्वी लोक पधारने का अपना मकसद बरबस याद आ जाता। कम वेतन, ज्यादा काम, कम फुरसत, बेमतलब काम – स्वर्ग लोक में दास-दासियों की बगावत में जैसी बातें हैं वैसी ही मैनेजमेंटों के नीति - वाक्य में ! अति विशाल तथा अति सूक्ष्म को समेटे विस्तृत आधार पर, संस्थागत आधार पर पालिसियाँ बनाती मैनेजमेंटों के सम्मुख नारद जी ने देवताओं की फौरी समस्या रखी। स्वामियों - सामन्तों के महाज्ञानी - महाबलि - महाकुबेर व अत्यन्त वाचाल वारिसों ने चुटकियाँ बजा कर नारद जी को समाधान दर समाधान सुझाये :

मजदूरों की तरह दास-दासियों में परमानेन्ट, कैजुअल और ठेकेदार के लोगों की कैटेगरियाँ बनाओ। हकीकत में उनमें बेशक कोई फर्क नहीं है पर उनमें एक-दूसरे से भिन्न होने का भ्रम पैदा करो। उन्नीस-बीस के फर्क को क्वालिटी

(बाकी पेज दो पर)

नारद मुनि ने चुगली . . . (पेज एक का शेष)

में भिन्नता, एक और सौ के फर्क की तरह पेश करो। स्त्री-पुरूष के भेद देवताओं ने दास-दासियों में डाले हैं पर जाती - धर्म - क्षेत्र - देश - रंग के नामों पर सेवकों में फूट डालने में लापरवाही बरती है। यह स्वर्ग लोक की बगावत के नाम तक में जाहिर है। पृथ्वी पर जाट - गूजर, हिन्दू - मुसलमान, पूरबिये - लोकल, जर्मन - जापानी के तौर पर घटनाओं का बखान हम सफलतापूर्वक करते हैं। मजदूर-वजदूर नाम से जब-तब प्रचारित होती बातें वास्तव में लीडरों के बयान, आदेश, वक्तव्य होती हैं।

पिछले जन्म के फल जैसे किस्से बेशक जारी रखो पर यह मत सोचो कि इनसे काफी-कुछ होगा।

और फिर, देवताओं के सम्मुख तो पृथ्वी पर हमारे सामने मुँह बाये खड़े सामुहिक काम के पुख्ता आधार से उभरते सामुहिक विरोधों के सिलसिले का डर नहीं है। फिर भी सेवकों की बगावत नाम की चीज हो गई ! नारद जी को देवताओं की अति अक्षमता को इस उदाहरण से स्पष्ट करते हुये मैनेजमेंटों ने समूह और सामुहिकता पर गहन चिन्तन की आवश्यकता समझाई। हर किसी ने नारद जी के मन-मस्तिष्क में यह बात पैठाने की कोशिश की कि समूह में बल है वाली बात देवों - स्वामियों - मैनेजमेंटों के लिये तभी घातक बनती है जब सामुहिकता का पुट इसमें मिल जाता है।

दास-दासियों के समूह में जो बल है उसमे करोड़ों-अरबों गुणा बल मजदूरों के समूह में है। इन समूहों के बल मात्र से घबराने की कोई जरूरत नहीं है। बल्कि कार्य ऐसे करना चाहिये कि समूह के बल को अपने हित में इस्तेमाल कर सकें। फैक्ट्रियों को देखो। इस रफ्तार, इस पैमाने पर उत्पादन की स्वामी ही क्या, सामन्त - राजा - बादशाह तक कल्पना भी नहीं कर सकते थे। यह सब समूह के बल को ढँग से, योजनाबद्ध तरीके से काम करवाने का कमाल है। लेकिन सामुहिकता खतरनाक है ! बेहद खतरनाक !! साम - दाम - दंड - भेद की नीति लाभदायक है और देवताओं ने उसमें भी जो कोताही बरती है वह अक्षम्य है लेकिन... लेकिन ऐसे प्रयासों में अब मैनेजमेंटों-सरकारों के कई बार हाथ भी जलने लगे हैं। किसी की जड़ में मट्ठा डालने की तरह असल बात समूह के बल की तरह सामुहिकता का अपहरण करने की है।

"सामुहिकता का अपहरण" शब्दों का उच्चारण करते-करते नारद जी की निगाहें बहुत दूर कहीं देखने लगी, वे कहीं खो गये। हमने उन्हें डिस्टर्ब करना उचित नहीं समझा और उनकी तब तक कही बातों को नोट करने लगे।

अचानक नारायण... नारायण के स्वरों के साथ जैसे गहरी तन्द्रा टूटी हो, मुनिश्री हमारी तरफ देखने लगे। हमने चाय का जिक्र किया तो वे सहर्ष तैयार हो गये। चाय पीते वक्त भी नारदजी "सामुहिकता का अपहरण" बुदबुदाते रहे। बिचौलिये - बिचौलिये... कष्ट निवारण के लिये राम - बुद्ध - ईसा - मोहम्मद। यज्ञ - श्राद्ध - तारने के वास्ते बिचौलिये। धन-धान्य से परिपूर्ण करने, मनौती पूरी करने, आशीर्वाद देने वाले बिचौलिये। संकट-मोचकों को याद कर नारद जी की आँखें चमकने लगी। और फिर तो मुनिश्री ने इस सम्बन्ध में मैनेजमेंटों की बातें बहुत विस्तार से हमें बताई।

महापण्डितों ने नारद जी को समझाया कि चार्जशीट - सस्पैन्ड - रोजी-रोटी का डर, लाठी-गोली-जेल का भय, लालच-फूट की तिकड़में मजदूरों को भड़कने से रोकने और भड़कने पर ठन्डा करने के लिये हैं। कई लोग इन्हें बेशक बहुत महत्व देते हैं पर वास्तव में यह मर्ज का इलाज नहीं हैं, यह तो बीमारी को कन्ट्रोल में रखने के उपाय मात्र हैं। मजदूरों का सुलगता असन्तोष कभी भी आग पकड़ सकता है और तब दमन - दहशत - लालच मैनेजमेंटों के नुकसान को सीमित ही कर सकते हैं। दमन - दहशत - लालच से देवता बखूबी परिचित हैं, इनमें अत्यन्त निपुण भी हैं लेकिन पुख्ता कन्ट्रोल के असल नुस्खे से वे अनभिज्ञ हैं। कन्ट्रोल की असल दवाई है "सामुहिकता का अपहरण"।

सामुहिकता का अपहरण क्या है? मजदूरों को स्वंय सोच-विचार कर निर्णय लेने और कदम उठाने से हतोत्साहित करना व रोकना। और अब सत्ता ऐसा समाज में व्यापक स्तर पर कर रही है। इसके लिये मजदूरों में यह धारणा गहराई से पैठाने की जरूरत है कि वे डरपोक और बेवकूफ हैं- खुद कुछ भी करने की मजदूरों की औकात ही नहीं है। मजदूर स्वयं को असहाय मानें यह सामुहिकता का अपहरण करने की आवश्यक शर्त है पर यह स्वयं में सामुहिकता का अपहरण नहीं है। किन्हीं अन्यों को, प्रतिनिधियों - नुमाइन्दों को सोचने - समझने, निर्णय लेने और आदेश देने वालों के तौर पर स्वीकृत करना/कराना सामुहिकता का अपहरण है। और वे अन्य बेहतरीन तब होते हैं जब वे मजदूरों के बीच से हों।

इस अपहरण को टिकाऊ बनाने के लिये सामुहिकता की अव्यवहारिकता और नुमाइन्दा पद्धति के व्यवहारिक होने को मजदूरों में स्वीकृत करवाना जरूरी है। सोचिये तो, 400-500 मजदूर तो बहुत ज्यादा हैं, 30-40 से भी कोई मैनेजर एक ही समय बात कर सकता है क्या? ऐसा करना पड़े तो हम पागल हो जायें। जब-तब किसी मैनेजर को ऐसी हालात का सामना करना पड़ता है तब उसके हाव-भाव देखिये – बिलकुल पागलों जैसे होते हैं। और कल्पना कीजिये कि एग्रीमेन्ट के लिये 500 मजदूर फैक्ट्री गेट पर तम्बू तले मैनेजमेंट से नेगोसियेशन करने लगें ! क्या कोई भी मैनेजमेंट ऐसे में कुछ कर सकेगी? इसीलिये मैनेजमेंट काडर की ट्रेनिंग का आवश्यक अंग है यह सिखाना कि ऐसी परिस्थिति पैदा हो ही जाये तो वैसे में बात करने की अव्यवहारिकता का रोना रोयें और नुमाइन्दों से बात-चीत की पेशकश करें। व्यवहारिक-अव्यवहारिक के जाल में उलझ कर मजदूर नुमाइन्दे भेजने के लिये राजी हुये कि समझ लो आपने बाजी जीत ली। और तब होशियार मैनेजमेंटें बातचीत में नुमाइन्दों को कुछ रियायतें दे कर भविष्य में ऐसी आकस्मिकताओं के लिये सुरक्षा कवच का निर्माण करती हैं।

सामुहिकता के अपहरण, प्रतिनिधियों - नुमाइन्दों के हाथों में अपने को गिरवी मानने पर ऐसा नहीं है कि मजदूरों को अपने नुकसानों - चोटों का पता नहीं चलता। हकीकत से मजदूरों को वाकिफ होना ही पड़ता है पर वे एक नुमाइन्दे की जगह दूसरे को, फिर तीसरे को, फिर पहले को ट्राई - रीट्राई की भूलभुलैया में फँस जाते हैं। और मैनेजमेंटें सामुहिकता की चिन्ता - भय से मुक्त हो कर मजदूरों के समूह बल का उपभोग करती हैं। जब तक नुमाइन्दा - प्रतिनिधि पद्धति को ठुकरा कर मजदूर खुद सोचने, फैसले लेने और कदम उठाने की राह पर नहीं बढ़ते तब तक ऊँच-नीच वाली सीढीनुमा व्यवस्था को, मैनेजमेंटों को कोई खतरा नहीं है।

बोलते-बोलते नारद मुनि की साँस फूल गई थी। हमने मुनिश्री को विश्राम करने की सलाह दी और श्री आरामचन्द्र की कृपा से उन्होंने हमारी बात मान ली। लेकिन लेटते-लेटते भी नारद जी ने हमसे यह आश्वासन ले लिया कि हम उनकी पूरी बात सुनेंगे।□

सब्जी मंडी आढतियों द्वारा दुर्व्यवहार

डबुआ बड़ी सब्जी मंडी, फरीदाबाद न्यू टाउन, से सब्जी खरीद कर तथा फेरी लगा कर बेचने वालों के साथ आढतिये बहुत दुर्व्यवहार करते हैं।

आढत का रेट 8% है लेकिन आढतिये 10% की दर से आढत लेते हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक नग के पीछे एक रुपया अलग से लेते हैं तथा प्रत्येक नग से आधा किलो से एक किलो तक माल निकाल लेते हैं। फेरीवालों द्वारा भुगतान के बावजूद आढतिये उनके नाम से खाते में पैसे चालू रखते हैं तथा पैसे दोबारा देने के लिये दबाव डालते हैं। माल की बोली लगने के वक्त जो फेरीवाले बोली लगाने में शामिल नहीं होते, आढतिये उन पर भी माल खरीदने के लिये दबाव डालते हैं। कई बार खराब माल खरीदने के लिये फेरीवालों के साथ जबरदस्ती की जाती है। फेरीवालों द्वारा एतराज करने पर उनसे नकदी छीन ली जाती है।

आढतियों की उपरोक्त गतिविधियों का विरोध करने पर फेरीवालों के साथ गाली-गलौज तथा मारपीट की जाती है। आढतियों द्वारा गाली-गलौज तथा मारपीट प्रायः हर रोज होती है।

24.2.95 सुरेश चौधरी, संजय कुमार राय, दिलीप कुमार साह फेरीवाले

हितकारी पोट्रीज

एक वरकर को हार्ट अटैक हुआ। दिल की बीमारी के इलाज के लिये पैसे नहीं। पैसे के लिये नौकरी तक छोड़ने को तैयार। मैनेजमेंट ने हिसाब देने से मना कर दिया। मजदूर मर गया है।

ईस्ट इंडिया कॉटन मिल

क्लोरीन गैस की चपेट में आये 65 मजदूरों को ई एस आई अस्पताल ले जाना पड़ा है।

★ **स्टार वायर (इंडिया) लिमिटेड,** 21/4 मथुरा रोड़, के गेट पर काले झन्डे लगे हैं।

जगह की कमी की वजह से खत नहीं छाप पाने का हमें खेद है। छूटे हुये पत्रों को अगले अंक में देने की कोशिश करेंगे।

बखान : आप-बीती का बातचीत में (4)

आपस में बातचीत के लिए हम लखानी शूज के वरकर का इन्तजार कर रहे हैं। बरबस हमारी निगाहें सामने व अगल-बगल के मकानों पर पड़ती हैं। एक-दूसरे की दीवारों से सटे 75-100 गज में बने इन मकानों में 8x8 फुट के 4 से 8 कमरे और एक-एक लैट्रिन-बाथरूम हैं। कमरों की छत काफी नीची है। हाथ ऊपर उठाने पर पंखे का ध्यान रखना पड़ता है। हर कमरे में 4-6 सदस्य रहते हैं। गली की ओर देखने पर एक नल दिखाई देता है। गर्मियों में नल पर कुछ ज्यादा ही भीड़-भाड़ होती है। सुअर नाली में मुँह मारते घूम रहे हैं। एक बच्चा नाली में टट्टी कर रहा है। सुअरों से बचाव के लिए हाथ में डंडा लिए है। सुअर के काटने पर बच्चों को इन्जेकशन लगाने पड़ते हैं। यह मोहल्ला ही नहीं पूरी कालोनी एक घनी बस्ती है। इसमें लाख से ऊपर की आबादी है। खाली, खुली जगह से परहेज बरता गया है। बच्चों के खेलने के लिए पार्क नहीं हैं। हम सब यह देख ही रहे थे कि तभी 5-6 साल का बच्चा अपनी मस्ती में चिल्लाता कमरे से बाहर की ओर दौड़ता आया। नीचे तले के कमरे में व बगल के कमरे में नाइट ड्यूटी करके आये वरकर सोये हैं। कहीं उनकी नींद में खलल न पड़े, बच्चे की मम्मी गुस्से में बच्चे को डाँटती है। डाँट सुनते ही बच्चे के चेहरे पर अपराध बोध का भाव। इतने में लखानी शूज का वरकर आ पहुँचा।

लखानी शूज कम्पनी के 19 प्लान्ट हैं। इसमें ठेकेदारों के हजारों मजदूर हैं। तीन-चार घन्टे की हमारी इस बातचीत में लखानी शूज के परमानेन्ट मजदूर ने ठेकेदारों के इन मजदूरों का जिक्र तक नहीं किया। हमने बातचीत के दौरान लखानी कम्पनी में ठेकेदारों के मजदूरों के बारे में कई प्रश्न पूछे। लेकिन लखानी शूज के इस परमानेन्ट वरकर ने कहा कि उसे जानकारी नहीं है। उसकी इस बात पर हमें काफी आश्चर्य हुआ।

जो काम आप फैक्ट्री में करते हैं वह आपको कैसा लगता है?

मेरा काम शारीरिक तौर पर भारी, थका देने वाला और रबड़ की गैस की बदबू वाला है। डिपार्टमेंट इन्चार्ज और दो-दो मैनेजर हरदम हमारी छाती पर खड़े रहते हैं। मजदूर आपस में एक-दूसरे से बातें न करें, इसकी कड़ी निगरानी रखी जाती है। घड़ी देखकर मात्र 12 मिनट के लिए हमें काम से छूट दी जाती है। इन 12 मिनटों में हमें चाय, बीड़ी-सिगरेट पीना और पेशाब के लिए जाना होता है। कैन्टीन में चाय, दाल-रोटी-सब्जी सब मार्केट रेट से मिलते हैं। हमसे अधिक से अधिक काम जबरन करवाया जाता है। जरूरी काम पड़ने पर भी छुट्टी नहीं मिलती। बीमार होने पर भी मैनेजमेंट पता लगाने घर तक आदमी भेज देती है। जिस समय मैं नौकरी पर लगा था उस समय मेरी सेहत व स्वास्थ्य बहुत अच्छा था। आठ साल ही नौकरी करते हुये हैं, अब आप देखिये कितना दुबला हो गया हूँ। पेट के रोग व साँस की तकलीफ से हरदम परेशान रहता हूँ। कुछ दिनों पहले मेरी तबीयत कुछ ज्यादा ही खराब हो गई। खून की उल्टियाँ हुई। मैं घबरा गया। प्राइवेट डॉक्टर के पास गया। उसने एक्सरा खिंचवाने को बोला। एक्सरा की रिपोर्ट में टी बी का शक बताया गया। डॉक्टर ने टी बी का इलाज शुरु कर दिया। एक महीने बाद मेरी हालत सुधरने की बजाय बिगड़ने लगी। मैंने डॉक्टर को बताया। डॉक्टर पूरा इलाज कराने को बोला। मैंने अपने को दूसरे डॉक्टर को दिखाया। दूसरे डॉक्टर ने मुझ से कहा कि आपको टी बी नहीं है। मेरे बलगम में भी खून आ रहा था। मैंने अन्य प्राइवेट डाक्टरों को भी अपने को दिखाया। सबने टी बी के रोग से मना किया। तीन हजार रुपये खर्च हो गये थे। बोनस व तनखा खत्म। अब मैं ई एस आई अस्पताल गया। ई एस आई डॉक्टर ने घर पर मिलने को कहा। 50 रुपये लिये। दूसरे दिन शीशा करवाया। ई एस आई डॉक्टर ने भी टी बी होने से मना किया और दूसरी दवाईयां दी। मेरे को कुछ आराम मिला। सब डॉक्टरों ने मेरे को कहा कि जो काम आप करते हैं उसे छोड़ दो तभी आपका रोग दूर होगा। पर नौकरी छोड़ने पर गुजारा कैसे होगा।

आपकी फैक्ट्री का माहौल कैसा है?

हमारी फैक्ट्री नये पर नया प्लान्ट खोलती जा रही है। लखानी के किसी भी प्लान्ट में 1500 रुपये से अधिक किसी भी मजदूर को तनखा नहीं मिलती। ठेकेदारों के मजदूर अधिक हैं। परमानेन्ट मजदूर बहुत कम हैं। हमारी फैक्ट्री में रबड़ का काम है। गैस और गर्मी से बचाव का कोई प्रबन्ध नहीं है। स्टीम के कारण गर्मी अधिक लगती है। रबड़ की गैस से अधिकतर वरकरों को साँस की तकलीफ और पेट में दर्द की शिकायत रहती है। हर समय नौकरी से निकाले जाने का डर रहता है। मैनेजमेंट मजदूरों को छोटी-छोटी बातों पर नौकरी से निकाल देती है। फैक्ट्री से बाहर मजदूरों की गतिविधि पर भी मैनेजमेंट निगाह रखती है। 1979-80 में मैनेजमेंट ने उस समय के सीटू लीडरों से सौदा कर सभी 500 परमानेन्ट मजदूरों को निकाल दिया। 1984-85 में मैनेजमेंट ने इन्टक लीडरों से सौदेबाजी कर बहुत से परमानेंट मजदूरों को निकाल दिया और कुछ को ठेकेदार बना दिया। इस प्रकार दो बार यूनियन लीडरों को लाने पर भी मजदूरों को अपनी समस्याओं से निपटने में कोई मदद नहीं मिली बल्कि नुकसान ही हुआ।

फैक्ट्री स्तर पर आपकी फैक्ट्री के मजदूरों ने कैसे-कैसे विरोध किये हैं ?

कई साल पहले की बात है। मैनेजमेंट एक-एक करके परमानेंट मजदूरों को निकाल रही थी। इसमें लीडरों की मिलीभगत को मजदूर समझ गये। इस पर एक दिन सभी मजदूर अपनी-अपनी मशीनें बन्द कर इकट्ठे डाइरेक्टर लखानी के पास पहुँच गये। साहब भौंचक्के रह गये। मजदूरों का सामुहिक तीखा विरोध देख कर डाइरेक्टर लखानी सहम गये और गँगाजल हाथ में लेकर मजदूरों को आश्वासन दिया कि आज से मैं किसी भी मजदूर को नौकरी से नहीं निकालूँगा। कुछ समय के लिए मजदूरों का नौकरी से निकाला जाना बन्द हो गया। एक साल पहले की बात है। एक दिन सुबह जब सभी मजदूर अपनी ड्यूटी पर जा रहे थे। मैनेजमेंट ने एक मजदूर शकील मुहम्मद को गेट पर रोक दिया। इस पर अन्दर ड्यूटी जाते हुए सभी मजदूर गेट पर इकट्ठा हो गये। शिफ्ट शुरु हुए मुश्किल से 5 मिनट हुए होंगे तभी प्लान्ट मैनेजर गेट पर दौड़े-दौड़े आये। शकील मुहम्मद को ड्यूटी पर लेने के मैनेजर के आश्वासन पर सभी मजदूर

सामुहिक कदम

★ सरकारी रेट 1260 का है, देते 900 रुपये महीना हैं। 4 घन्टे ओवर टाइम करना ही पड़ता है जिनके लिये 17 रुपये 50 पैसे के रेट से पैसे दिये जाते हैं जबकि सरकारी रेट से कम से कम 48 रुपये 50 पैसे होने चाहियें। अधिकतर मजदूर ठेकेदारों के हैं। थोड़ा कुछ भी बोलने पर नौकरी खत्म। **मौर्या उद्योग,** सैक्टर - 25 में इन हालात में ठेकेदारों के मजदूरों ने एक सामुहिक कदम उठाया। ओवर टाइम के वक्त मजदूरों को चाय और मट्ठी दी जाती थी। 14 मार्च को एक ठेकेदार के वरकरों को ओवर टाइम करते तीन घन्टे हो गये थे कि उनमें से कुछ की अचानक छुट्टी कर दी गई क्योंकि काम कम था। जिनकी छुट्टी की गई उन्हें चाय-मट्ठी देने से मना कर दिया। इस पर उन 15 मजदूरों ने चाय-मट्ठी दिये जाने पर जोर दिया और बिना चाय पीये फैक्ट्री से बाहर जाने से इनकार कर दिया। मजदूरों के इस सामुहिक कदम से घबरा कर ठेकेदार के फोरमैन ने चुपचाप चाय और मट्ठी फिर मँगवाई। चाय पी - मट्ठी खा ठेकेदार के 15 मजदूर इकट्ठे फैक्ट्री से निकले।

★ जनवरी में मैनेजमेंट ने **बाटा फैक्ट्री** में कन्ट्रोलरों को रिपेयर हो कर आये जूतों को पुनः कन्ट्रोल करने को कहा। कन्ट्रोलरों ने अतिरिक्त वर्क लोड उठाने से इनकार कर दिया। 9 मार्च को यूनियन लीडरों ने कन्ट्रोलरों से रिपेयर वाले काम को करने को कहा। इस पर 12-13 कन्ट्रोलरों ने आपस में सलाह-मशविरा कर यूनियन लीडरों को भी एक्स्ट्रा काम करने से इनकार कर दिया। कन्ट्रोलरों ने सामुहिक तौर पर लीडरों से कहा कि आप लोग मैनेजमेंट से एग्रीमेंट कर आओगे तो भी हम अतिरिक्त वर्क लोड स्वीकार नहीं करेंगे।

★ पानी की **मुजेसर** में बहुत दिक्कत रहती है। प्रशासन को अनेकों आवेदन देने के बाद भी स्थिति सुधरने की बजाय बदतर होती गई तब 31 मार्च को एक हजार के करीब बच्चों-महिलाओं-पुरुषों ने सड़क को जाम कर दिया। थानेदार ने हड़का कर सड़क खुलवानी चाही पर जन समूह के तेवर देख कर 15-20 लोगों को अफसरों से मिलने के लिये ट्रक उपलब्ध कराया। जन समूह ने एक स्वर में कहा कि कोई किसी से मिलने नहीं जायेगा, जिसने मिलना होगा वह खुद आयेगा। वायरलैस पर सन्देश। एक ट्रक अतिरिक्त पुलिस फोर्स, नगर निगम आयुक्त और मेयर पधारे। इंजीनियर बुलाकर तत्काल सर्वे आरम्भ करवाकर, पानी के अस्थाई प्रबन्ध के लिये टैंकरों को ला कर और शीघ्र समस्या के समाधान के भरोसे देने के बाद लोगों ने 9 बजे से चल रहे सड़क जाम को एक बजे खोला।□

फैक्ट्रियों में तथा बस्तियों में सामुहिक कदमों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाना हमारे लिये खुशी का काम है। अगर आपके पास ऐसी जानकारी है तो वह हमें दें।

कैलकॉम इलैक्ट्रोनिक्स

ए 57/1 ओखला फेज-II, नई दिल्ली स्थित कैलकॉम इलैक्ट्रोनिक्स लिमिटेड मैनेजमेंट भी हितकारी पोट्रीज और हिन्दुस्तान सीरिंज मैनेजमेंटों की तरह कम उम्र की अनब्याही स्त्रियों की मजदूरों के तौर पर भरती करती है। सामाजिक परिवेश द्वारा दब्बू, चुपचाप काम करते रहने के साँचे में ढालने के परिणाम का उपभोग करना मैनेजमेंटों में अधिकाधिक प्रचलन में आ रहा है। लेकिन संग-संग उभर रही है अबला कही जाने वालियों की सबल आवाज।

1991 में कैलकॉम मैनेजमेंट ने युवतियों को आपरेटर के नियुक्ति पत्र दे कर ट्यूनर्स और कलर पिक्चर ट्यूब बनाने के लिये भरती आरम्भ की। 150 महिला आपरेटर कैलकॉम इलैक्ट्रोनिक्स में काम करने लगी पर उन्हें वेतन अकुशल मजदूरी की दर से दिया जाता। फरवरी 94 में दिल्ली सरकार ने न्यूनतम वेतन की दरों में परिवर्तन किया। कानून अनुसार कैलकॉम महिला मजदूरों को वेतन कम से कम1806 रुपये महीना मिलना चाहिये पर मैनेजमेंट देती थी 1382 रुपये। अप्रैल 94 में लेबर डिपार्टमेंट में शिकायत दर्ज की गई। बात बढने पर मैनेजमेंट ने नये नियुक्ति पत्र दिये जिनमें उन्हें वरकर - III का पद, यानि अकुशल मजदूर का डेजिगनेशन दिया। काले कोट वालों ने मैनेजमेंट की तरफ से दलील दी कि पहले दिये गये नियुक्ति पत्रों में क्लर्की-गलती हो गई थी। अब लेबर कोर्ट इस पर गम्भीर चिन्तन-मनन कर रहा है और उम्मीद है कि पाँच साल में दूध का पानी और पानी का दूध कर ही देगा।

खैर। बेजुबानों की जुबान खुली। 19 नवम्बर 94 को कैलकॉम इलैक्ट्रोनिक्स लिमिटेड मैनेजमेंट बदतमीजी और हाथापाई पर उतर आई। इस हरकत के विरोध में उठते स्वरों को दबाने के लिये मैनेजमेंट ने 30 को सस्पैन्ड कर दिया और बाकी को भी गेट बाहर धकेल दिया। 22.11.94 से मैनेजमेंट ने 142 मजदूरों को फैक्ट्री से निकाला हुआ है और कहती है कि मजदूर हड़ताल पर हैं। फैक्ट्री गेट पर धरने में ओखला डी- ब्लाक स्थित कैलकॉम प्लास्टिक्स की वरकर भी शामिल हो गई। धरने पर बैठे मजदूरों को फैक्ट्री गेट से हटाने के लिये मैनेजमेंट अदालत से 200 गज वाला स्टे ले आई। और, पुलिस के संरक्षण में कैलाकॉम मैनेजमेंट एक तरफ जहाँ नई युवतियों को नियुक्ति पत्र दे रही है वहीं दूसरी तरफ लेबर डिपार्टमेंट से संघर्षरत महिला मजदूरों ने जो आदेश हासिल किये हैं उन पर दिल्ली हाई कोर्ट से स्टे ले आई है।

कैलकॉम मैनेजमेंट ने मजदूरों के घरों में खत भेजे हैं जिनमें उन्हें अपनी पुत्रियाँ बता कर पुत्रियोचित व्यवहार की अपेक्षा की है। मैनेजमेंट ने माता-पिता से अपील की है कि वे यह सुनिश्चित करें कि उनकी बेटियाँ फैक्ट्री में भी घर की तरह व्यवहार करें। मुँह बन्द रख कर चुपचाप काम करने की स्त्रियोचित राह पर नहीं लौटने पर गम्भीर परिणाम भुगतने की चेतावनी पत्र का कलेवर है। और धरने पर बैठी महिला मजदूरों को अपहरण की धमकियाँ देकर मैनेजमेंट ने अपनी बेटियों को नया जायका दिया है।

इस साल 2 फरवरी से कैलकॉम की संघर्षरत महिला मजदूरों ने मुख्यमन्त्री की कोठी पर धरना और भूख हड़ताल आरम्भ की हुई है। 8 मार्च को ओखला इन्डस्ट्रीयल एरिया में संघर्षरत मजदूरों और समर्थकों ने प्रभावशाली रैली निकाली।

(जानकारी हमें सहेली, डिफेन्स कालोनी फ्लाई ओवर मार्केट, नई दिल्ली - 110024, से मिली है।)

19अप्रैल को सुबह दस बजे, 20 को शाम 5 बजे और 21 अप्रैल को रात 8 बजे इस अखबार के अप्रैल अंक पर मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी में चर्चा होगी। हर कोई इसमें भाग ले सकता है।

अखबार बाँटने में मदद चाहिये। जो इस काम में हाथ बँटाना चाहते हैं वे मजदूर लाइब्रेरी में सम्पर्क करें।

जो चाहते हैं कि यह अखबार ज्यादा लोग पढ़ें, ऐसे दो हजार मजदूर अगर हर महीने दो-दो रुपये दें तो इस अंक की तरह दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

संवाद के उद्देश्य और लक्ष्य

(यह लेख हम "नारी संवाद" नामक पत्रिका के अंक 13 व 14 पर विचार करने के पश्चात कुछ मुद्दों पर आम बहस की आशा के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं। पत्रिका का पता है –

डॉ. रेणु दीवान, पोस्ट बैग न. 12, जमशेदपुर – 831001)

यह तथ्य हमें काफी निराश करता है कि अधिकतर राजनीतिक व सामाजिक चर्चाओं में जो बुनियादी प्रश्न होते हैं वे ओझल हो जाते हैं, खो जाते हैं – बल्कि यह कहना अधिक सटीक होगा कि वे उठाये ही नहीं जाते। आधारभूत महत्व के सवाल बहसों की विषय-वस्तु बनते ही नहीं हैं। हम इस धारणा का पक्ष लेंगे कि सामाजिक प्रक्रिया में कोई भी सचेत हस्तक्षेप, किसी भी स्वरूप में वह क्यों न हो, जब अपने उद्देश्य व लक्ष्य की केन्द्रियता के लिये आवश्यक व्याख्या को नजरअन्दाज करता है और घटनाओं की प्रतिक्रिया मात्र के दायरे में सिकुड़ जाता है तब वह अर्थहीन तक हो जाता है।

बच्चों की शिक्षा को लें। सजा और पुरस्कार दो छोर हैं जिनके जरिये बच्चों के मन-मस्तिष्क को ढाला जाता है। अनुशासन का कोड़ा बच्चों के समय-काल, स्थान-जगह और मनुष्यों के बीच रिश्तों के अनुभव को उनके स्वभाव का अंग बनाने के लिये कार्यरत है। पाठ्यक्रमों का बच्चों को सामाजिक तौर पर उपयोगी बनाने का अर्थ उन्हें उजरती दासों में बदलना है, रचनात्मक मनुष्यों में नहीं। ऐसे में प्रश्न है : बच्चों की मुक्ति क्या है? अगर कोई कहता है कि बच्चों की भलाई/बेहतरी अधिक सख्त और निपुण विद्यालयों में है तो जाहिर है कि मामला गड़बड़ है। जाहिर है, अगर हम अपने बच्चों को "बोल, कि लब तेरे आजाद हों" शब्दों को गम्भीरता से लेने के लिये कहते हैं तो हम अधिक सख्त अनुशासन, सुनिश्चित सजा और लच्छेदार पुरस्कारों की वकालत नहीं करेंगे।

फैक्ट्री कार्य को लीजिये। फैक्ट्री में एक "अच्छे वरकर" का अर्थ वह मजदूर है जिसने मैनेजमेंटों की प्रोडक्शन दलीलों को आत्मसात कर लिया है और जो उन लोगों को हेय दृष्टि से देखता है जो क्रूर-अमानवीय काम का विरोध करते हैं। फैक्ट्री में डिसिप्लिन तन्त्र को मजबूत करने का अर्थ है काम की तीव्रता और बोझ बढाना, कार्यस्थल पर मानवीय रिश्तों को घटाना तथा मन-मस्तिष्क-शरीर की पीड़ा में वृद्धि।

परिवार को लें। क्या परिवार में जीवन बेहतर हो जायेगा अगर संसाधनों के प्रवाह और इच्छाओं की दिशा तय करने व निर्देशित करने के लिये एक व्यक्ति के आदर्श को स्वीकार कर लिया जाये?

और सरकार माई-बाप को ही लीजिये। मान्यता प्राप्त से भिन्न सोच-विचार-आचार के प्रवाह को सत्ता निर्धारित करती है। मंडी के लिये उत्पादन और खरीद-बिक्री के गर्भ से उपजते रोजमर्रा के टकरावों को रोकने और नियमों-कानूनों से बाँधने, उनके दायरों में रखने को शासन क्रियाशील रहता है। इसलिये ताकतवर सरकार, मजबूत शासन, शक्तिशाली सत्ता, कठोर व सख्त नियम - कानून का अर्थ है भिन्न आचार-विचार के लिये कम छूट, हँसी-मजाक की कम गुँजाइश, इन्द्रधनुषी छटा को समेटती कम पत्र-पत्रिकायें, और संवाद का अकाल।

अतः मुक्ति की कोई अवधारणा अगर कहती है कि हम मुक्त होते हैं ऐसी संस्थाओं के मजबूत होने से जो हमें छात्र, मजदूर, स्त्री, पुरुष, नागरिक के साँचों में ढालती और परिभाषित करती हैं, तो उन्हें गम्भीरता से लेना क्या कोई अर्थ लिये है? ▫

रुटीन

22 फरवरी को नाइट शिफ्ट में मौर्या उद्योग में हायड्रोलिक टैस्ट पर एक वरकर का हाथ लहुलुहान हो गया, सिलेन्डर ने एक मजदूर के जूते को काटते हुये उसके पैर को चीर दिया, एक वरकर का अँगूठा फट गया, आठ मजदूरों की आँख सूज गई। सैक्टर-25, सोहना रोड़ स्थित इस फैक्ट्री में 300 मजदूर एल पी जी सिलेन्डर और वाल्व बनाते हैं। तीन चौथाई वरकर ठेकेदारों के हैं। 12 घन्टे की ड्यूटी है। न न्यूनतम वेतन दिया जाता और न ई एस आई कार्ड। सुरक्षा के उपाय न के बराबर हैं। पहुँचे से हाथ कटना, हाथ जलना, हाथ छिलना, आँख में गरम बुरादा पड़ना, पैर में चोट लगना आम बात हैं और ज्यादा चोट लगे मजदूरों की पट्टी करवा कर मौर्या उद्योग मैनेजमेंट उन्हें नौकरी से निकाल देती है। एक्सीडेन्ट शब्द अनहोनी, असामान्य की गूँज लिये है जबकि फैक्ट्रियों में मजदूरों के चोट लगना, वरकरों का घायल होना रुटीन है।

★ **औरेक्स प्लास्टिक्स,** 99 सैक्टर - 24 में मैनेजमेंट ने 21 मार्च से तालाबन्दी की हुई है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 **पोस्टल रजिस्ट्रेशन** L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी – 548 नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।